जंगे-आज़ादी के मार्ग दर्शक श्री सत्गुरु राम सिंह जी और नामधारी सिक्ख

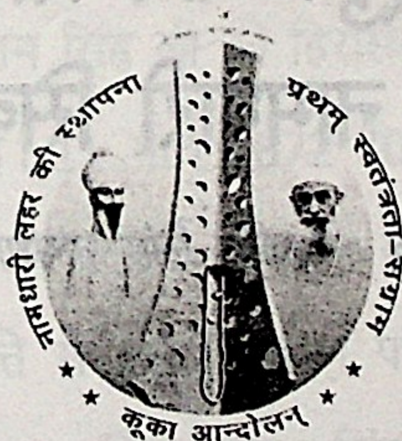


अजीत सिंह नामधारी



पंजाब सरकार

जंगे-आज़ादी के मार्ग दर्शक श्री सत्गुरू राम सिंह जी और नामधारी सिक्ख



अजीत सिंह नामधारी



पंजाब सरकार

JANGE AZADI DE MARG DARSHAK
SRI SATGURU RAM SINGH JEE ATTE NAMDHARI SIKH

By: Ajit Singh Namdhari

जंगे-आज़ादी के मार्ग दर्शक श्री सत्गुरू राम सिंह जी और नामधारी सिक्ख

लेखक : अजीत सिंह नामधारी

जुलाई, 2007
कापियां : 10,000
प्रकाशक : निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, पंजाब
मुद्रक : प्रिंटिंग सैंटर, चण्डीगढ़
द्वारा : कंट्रोलर मुद्रक एवं लेखन सामग्री, पंजाब

प्रवेश

यह बात 17 जनवरी, 1872 ई0 की है, जब अंग्रेज़ सरकार ने बगावत करने के जुर्म में मलेरकोटले के रक्कड़ में 49 नामधारी सिक्खों को सरेआम तोपों के सामने खड़ा कर के उड़ा के शहीद कर दिया गया। एक बारह साल के बच्चे बिशन सिंह को तलवार के साथ टुकड़े-टुकड़े करके शहीद कर दिया क्योंकि उसने अंग्रेज़ हुकमरान डिप्टी कमिश्नर कावन की दाड़ी को हाथ डाला था। उसी रात इस बगावत के सूत्रधार श्री सत्गुरू राम सिंह जी को हिरासत में लेकर इलाहबाद जेल में कैद कर दिया गया। 11 मार्च 1872 ई0 में बंगाल रैगूलेशन-III 1818 के अधीन देश निकाला दे के रंगून बरमा (माईना मार) में कैद करने के लिये कलकत्ते से समुद्री जहाज़ पर चढ़ा दिया। उस समय अंग्रेज़ हुकमरान ने सवाल किया, 'राम सिंह अब तो आपको, आपके सूबों को हमने कैद कर लिया है, देश निकाला दे दिया है, अब तुम क्या करोगे'?

तब सत्गुरू राम सिंह जी ने उत्तर दिया था, 'बिल्ले मैं घर घर राम सिंह पैदा कर चला हूं, ऐसी चिंगारी जलाई है जो एक दावानल की तरह तेरे साम्राज्य को जलाकर राख कर देगी।'

इतिहास गवाह है कि सत्गुरू राम सिंह जी का यह कथन अक्षर-अक्षर सच हुआ, सारे देश में जागरूकता आने लगी, भारतीय

आज़ादी के लिये मतवाले हो उठे, गली-गली, कूचे-कूचे 'इन्कलाब-जिंदाबाद' के नारे गूंजने लगे, 'वंदे मातरम' के स्वरों ने आकाश गुंजा दिया। हर धर्म, जाति, वर्ग, उम्र और रंग के भारतीय ने एक होकर भारत माता को आज़ाद करवाने के लिये कमर कस ली। फिर उन को फांसी के रस्से, तोपों के गोले, जेल की सलाखें, काले पानी के दुःख उन्हें रोक न सके और देश भक्तों की कुर्बानी की वजह से देश आज़ाद हो गया। स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी ने बिलकुल सच कहा था, 'हमारी आज़ादी लहर को देश को हर कोने से समाज के सारे महत्वपूर्ण वर्ग के लोगों से सहयोग शक्ति मिली थी। नामधारी सिक्खों का आज़ादी लहर में योगदान बहुत महत्वपूर्ण और नवीनतम था।'1

दरअसल, 12 अप्रैल 1857 से 15 अगस्त 1947 ई0 तक लगातार 90 साल नामधारी सिक्खों ने केवल देश की आज़ादी के लिये आप कुर्बानियां ही नहीं दी, बल्कि देश वासियों का मार्ग दर्शन भी किया। इसीलिये हमें महात्मा गांधी जी के चिंतन में से, नेहरू जी के सिधातों में से, श्री बाल गंगाधर तिलक के शब्दों से, नेता जी के जीवन दर्पण में से और शहीद भगत सिंह जी के फलसफे में से हमें सतूगुरू राम सिंह जी की दार्शनिकता, सूझ बूझ और राजनीतिक झलकेगी।

आओ। इस संदर्भ में श्री सतूगुरू रामसिंह जी और कूका अंदोलन का अध्ययन करें।

संघर्ष से पहले

श्री सतगुरू रामसिंह जी का प्रकाश माघ शुद्वी पंचमी बसंत वाले दिन, सम्वत् 1872 विक्रमी, 3 फरवरी सन् 1816 ई0 में गांव राईयाँ, जिला लुधियाना पंजाब में माता सदा कौर जी और पिता बाबा जस्सा सिंह जी के घर हुआ। समाज में प्रचलित रिवाज़ों के अनुसार सात साल की उम्र में आप की शादी माता जस्सां जी सुपुत्री श्री साहिबू जी गांव धरोड़ी के साथ हुआ। 22 साल की आयु में महाराजा रंजीत सिंह की कुंवर नौ-निहाल सिंह की रैजीमैंट में ब्रिगेड़-मेजर मैक्सन की कमान में भर्ती हो गए, पर वृति साधुओं वाली थी। इसलिये आपकी पलटन का नाम ही भक्तों की पलटन पड़ गया।

27 जून 1839 ई. में महाराजा रंजीत सिंह की मौत हो गई और पंजाब के बुरे दिन शुरू हो गए। सिक्ख राज्य अंग्रेजों की फूट डालो और राज्य करो की नीति का शिकार हो गया। सिक्ख जरनलों ने निजी लाभों के कारण 'अजय-खालसा' फौजों का नरसंहार करवाना शुरू कर दिया। सतगुरू राम सिंह जी ने हालातों को मुख्य रखते फौज़ में चेतावनी भी दी और खुद नौकरी छोड़ के सन 1845 ई. में घर वापस आ गए। अगले चार सालों में लाहौर दरबार में क्या गुज़रा इसका इतिहास गवाह था। सन 1845 में अंग्रेजों के साथ लड़ाई समय हरी के पतन से सतलुज पार करने के बाद खालसा फौज़ों का जनरल लाल सिंह गद्दार निकला, बजाये वह फिरोजपुर पर हमला करता, उसने कैप्टन पीटर निक्लसन

को पत्र भेज कर पूछा, 'मैं सतलुज निकल आया हूं। आप मेरी अंग्रेज़ प्रति मित्रता जानते हो बताओ क्या करू' उतर था- फिरोज़पुर पर हमला नहीं करना और जितनी देर रूक सको रूको। अगर गद्दारी छोड़ कर उसने 'फिरोज़पुर उस वक्त हमला किया होता तो शायद 1845 ई0 के बाद का इतिहास कुछ और होता। लेकिन लाल सिंह ने तो मुदकी में हमले का हुक्म देने के बाद भी लड़ाई में कोई दिलचस्पी न ली। इसी तरह की गद्दारी फिरोजशाह की लड़ाई में हुई जब लाल सिंह बड़ी गिनती में अपने सिपाही और तोपें लेकर देश भक्तों को तोपों के सामने मरने के लिये छोड़ कर भाग गया और तेज़ सिंह अंग्रेज़ों के कैंप में अपनी वफादारी पक्की करने पहुंच गया। सभरावां की लड़ाई के समय भी लाल सिंह खालसा फौजों की व्यूह-रचना बारे महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिये अपने विरोधी कैंप के अफसरों के पास चला गया।'2

चाहे गुरु जी नौकरी छोड़ ही आए थे पर 1839-1849 तक पूरा एक दशक उन्होंने पंजाब का राजनीतिक पतन होता देखा और विचार भी किया था। 29 मार्च 1849 ई0 को सुबह 7 बजे आज़ाद पंजाब का अंतिम दरबार लगा और इसमें अंग्रेज़ अधिकारी इलियट और सर हैनरी लारेंस के पहुंचने पर फारसी भाषा में यह घोषणा कर दी गई कि पंजाब को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया है। बालक महाराजा दलीप सिंह से घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करवा कर राज-गद्दी से उतार दिया गया। लार्ड डलहौज़ी के आदेश अनुसार 21 दिसंबर 1849 ई0 को

महाराजा दलीप सिंह को फतेहपुर सीकरी भेज दिया गया और वहां से 8 मार्च 1853 ई0 को धर्म परिवर्तित करके इंगलैंड भेज दिया। सो इस तरह राजनीतिक गुलामी के बाद, अंग्रेज़ों ने अपना अगला तीर छोड़ा, सांस्कृतिक तौर पर देश वासियों को खोखला करने का।

अंग्रेज़ों ने महाराजा रंजीत सिंह के समय ही सब से पहले 1834 ई0 में लुधियाना को इसाई मिशनरियों का केन्द्र बना लिया था और अगले साल वहां स्कूल खोल कर डाक्टर लोरी ने प्रचार कार्य शुरू कर दिया था। दो साल बाद ही 1837 ई0 में जनवरी के महीने एक चर्च भी बना लिया। यह सारा कुछ सतुगुरू राम सिंह जी के अपने ज़िला लुधियाने में हुआ था। लाहौर ऊपर यूनियन जैक लहराने के बाद तो वहां इसाई प्रचार को सरकारी समर्थन मिलना शुरू हो गया था। प्रेस्बिटेरियन मिशन ने अम्बाला (1848), लौहार (1848) रावल पिंडी, (1865) में केन्द्र बनाए। चर्च मिशन ने अमृतसर (1852), कांगडा (1854) मुलतान और पेशावर (1855) में अपने केन्द्र स्थापित किए। दो सालों में इन्होंने पांच केन्द्र, 24 प्रचारक, तीन छोटे आठवीं के स्कूल, 9 उर्दू के स्कूल, जिनमें 488 छात्र, 2 बोर्डिंग स्कूल, 35 लड़कियों के स्कूल और 27 रविवार के स्कूल थे।'3

धर्म परिवर्तन से समाज में विरोध होता था। लेकिन इसाई बनने से आर्थिक नुक्सान न हो, लार्ड डलहौज़ी ने 1850 ई0 में एक ऐक्ट (Lex Loci Act) भी पास करवा दिया। जिसके अनुसार अपना धर्म

छोड़ने के बाद भी हर व्यक्ति वशानुगत जायदाद का हकदार बना रह सकता था।

तन मन की गुलामी के बाद अंग्रेज़ों ने देश वासियों को आर्थिक तौर पर खोखला करना शुरू कर दिया। घरेलू दस्तकारी धंधे को घात लगाई और इंग्लैंड का बना माल भारत की मंडियों में बढ़ने लगा।

'1814 से 1835 के मध्य में हिन्दोस्तान में विदेशी कपड़े की खपत 10 लाख गज़ से बढ़कर 5 करोड़ 10 लाख गज़ हो गई। इसी दौरान में हिन्दोस्तान के सूती कपड़ों की खपत विलायत में 77 लाख 50 हज़ार थान से कम होकर 30 लाख 6 हज़ार थान रह गई और 1844 में तो यह केवल 63 हज़ार थान ही रह गई थी। विलायती मशीनों के बने कपड़े ने हिन्दोस्तान के जुलाहों को तबाह कर दिया। मशीनों के बने सूत ने जुलाहों की रोज़ी खत्म कर दी। 1818 से 1836 तक हिन्दोस्तान में विलायती सूत पहले से 4200 गुणा ज्यादा खपने लगा।'4

इस सब के साथ लोग कुकर्मी और सामाजिक कुरितियों से भी दबे हुए थे। अमीर-जागीरदार जो अंग्रेज़ो के पिछलग्गु थे, गरीबों को कुचल रहे थे। समाज की जन्मदाती औरत जो मां, बहन, स्त्री के रूप में मर्द-जाति को पालती पोसती और संभालती है को बुरी तरह तिरस्कृत किया जा रहा था। लड़कियों को पैदा होते मार देना, बेचना, अदला-बदली करना, बाल-विवाह, सती प्रथा और विधवा विवाह की मनाही जैसी प्रचलित रस्मों ने सामाजिक हालात ज्यादा बिगाड़ दिये थे।

जरूरत थी इन हालातों में देश को आज़ाद करवाने की, समाज सुधार की, आर्थिक स्थिति बेहतर बनाने की, अमीर-गरीब के बीच की खाई भरने की, लोगों में आध्यात्मिक प्रकाश करने की। इन सब को मद्दे नज़र रखते हुये सत्गुरू राम सिंह जी ने बारह साल के चिंतन के उपरान्त (1845 से 1857 ई0) एक संघर्ष नीति तैयार की। एक नए समाज की रचना करने के लिये पहला मुबारक कदम उठाया।

संत खालसे की साजना और आज़ादी

सत्गुरू रामसिंह जी ने श्री भैणी साहिब ज़िला लुधियाना (पंजाब) को अपनी कर्म भूमि बनाया और 12 अप्रैल 1857 ई. को वैशाखी वाले शुभ दिन से भारतवासियों को इकट्ठा करना शुरू किया। खण्डे बाटे का अमृत तैयार किया और पांच सिक्खों भाई काहन सिंह निहंग, गांव चक्क कलां रियासत मलेरकोटला, भाई लाभ सिंह रागी अमृतसर, भाई सुधा सिंह गांव दुर्गापुर ज़िला जालंधर, भाई आत्मा सिंह गांव आलमपुर ज़िला सयालकोट और भाई नैणा सिंह गांव वरियाहां, ज़िला सयालकोट को अमृत छका कर सदमार्ग पर चलाया। गुरू जी ने लोगों में स्वैमानता और बीर रस पैदा करने के लिये यह जरूरी जाना कि जब तक लोगों की आत्मिक अवस्था नहीं बनती, यह मिट्टी के माधो ही रहेंगे। सो उन्होंने, 'भय काहू को देत नहि, नहि, भय मानत आन' की शिक्षा देने के लिये और उच्च आचरण बनाने के लिये

प्रभु-सिमरन करने और गुरूवाणी पढ़ने के लिये उपदेश दिया। लाहौर से पहली बार पत्थर के छापे के ऊपर आदि श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी की छपाई करवा कर पवित्र बीड़ें तैयार करवाई, ताकि लोग गुरबानी पढ़े और ज्ञान-वान बने।

भाईचारक मेल मिलाप, सहनशीलता और आपस में बांट कर खाने को कहा। हक-हलाल की शुद्ध मेहनत करने के लिये श्री गुरू नानक देव पातशाह जी का यह शब्द दृढ़ करवाया- 'हक पराया नानका उस सुअर उस गाय।' नशे रहित शाकाहारी जीवन व्यतीत करने के लिये उपदेश दिया।

गुरू जी ने लड़के और लड़कियों दोनो को शिक्षा देने का आदेश दिया। पहली बार 1 जून सन् 1863 ई. को जयेष्ठ की पूर्णमाषी सम्वत् 1920 विक्रमी को गांव सियाहड ज़िला लुधियाना में औरतों को अमृत छकाया और सामाजिक बराबरी प्रदान करने के लिये उन्हें सूबा (प्रबंधक) बना दिया। सूबा (प्रबंधक) के रूप में पहली स्त्री बीबी हुकमी थी।

गुरू जी ने 'पैदा होते ही लड़कियां मारने, उन्हें बूढे लोगों को बेचने, दरिद्रता, बदमाश, कुकर्मी, पापी, सिख-धर्म के बाहर शादी करने और आमने-सामने बटवारे में रिश्ता करने की बिलकुल मनाही की। मौत के बाद बूढ़े, बूढियों के नाक ऊंचे करने, पटड़ी फेर गदौड़े फेरने पर, गांव को पक्की रोटी खिलाने या कच्चा राशन देने जैसी बुरी रस्मों को रोकने के लिये प्रचार किया। बूढ़े बुजुर्गो के लिये आदि श्री गुरू ग्रन्थ

साहिब जी की वाणी के पाठ का भोग डाल कर उनकी आत्मा की शांति के लिये अरदास करने की प्रथा चलाई।' 5

उस समय विवाह से संबंधित खर्चे बहुत बढ़ा दिये गये थे। इसलिये लड़कियों को बेचने और अदला-बदली जैसी बुराईयों ने जन्म ले लिया था। सत्गुरू राम सिंह जी ने बिना ठाके, शागुन बारात-डोली, मिलनी, मुकलावे और दहेज के विवाह करने की एक नई प्रथा का श्री गणेश किया, जिसको 'आनन्द कारज' का नाम दिया। केवल सवा रुपये में विवाह करके समाज में क्रांति ला दी। पहली बार 3 जून 1863 ई0 को गांव खोटे ज़िला फिरोजपुर (पंजाब) में 6 अंतरजातीय विवाह किये गये। आनन्द कारज की मर्यादा इस तरह निर्धारित की। सब से पहले हवन किया जाता है। हवन में मंत्रों की जगह गुरूवाणी पढ़ी जाती है। जपुजी साहिब, जपु साहिब, चौपई, ऊगरदंती, अकाल उस्तति, चंडी की वार, चंडी चरित्र दूसरा का पाठ किया जाता है। यह इतिहास में पहली बार था कि आदि श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी में रचित फेरों के पाठ के साथ विवाह हुए, वह भी बिना पंडित के।

'श्री राम सिंह कूके पहले, आनन्द सुद्दन्द पढाए सहले। तिनको देख और सिख घने, लगे आनन्द पढ़ावन तने।' 6

यह समाज के ठेकेदार और पंड़ितों आदि के रोज़गार और सरदारी पर चोट थी। इन ठेकेदारों ने अंग्रेज़ों से शिकायत की। सत्गुरू राम सिंह जी को पुलिस के पहरे तहत 14 जून 1863 को श्री भैणी

साहिब पहुंचाया गया।

'बाबा राम सिंह एक महान सुधारक व रहनुमा हुए हैं जिन्होंने समाज में पुरुष और स्त्री की सम्पूर्ण ऐकता का प्रचार किया और अपने प्रचार में सफल भी हुये। अगर उन्होंने देश व जाति के लिये जो और महान काम किये है, वह छोड़ भी दिये जाये तो उनका एक यह प्रचार कि स्त्री व पुरुष समाज में बराबर के हकदार हैं, उनको संसार भर के शिरोमणी सुधारकों की कतार में खड़ा कर देता है।'7 पर सत्गुरू राम सिंह जी के समाज सुधार प्रोगाम्र में से अंग्रेज़ों को अपनी सत्ता पर हमला होता नज़र आने लगा। रिपोर्ट भी इस तरह की थी कि गुरू राम सिंह दोबारा खालसा राज्य स्थापित करना चाहते हैं। इस लिये 3.7.1863 को पंजाब सरकार की तरफ से हुकम जारी हो गया कि 'राम सिंह को हिदायत की जाए कि अपने गांव में ही रहेगा और पुलिस सीधी खबर रखेगी कि उस (गुरू राम सिंह) की क्या गतिविधियां है।'8

यह नज़रबंदी 13-2-67 तक रही। अंग्रेज़ सोचता था कि नामधारी कूके सिक्खों का प्रचार बंद हो जाएगा पर हुआ इस के उलट। गुरू जी ने पहले 5 और फिर 17 और, कुल 22 सूबे बना दिये। उन्होंने गांव-गांव, नगर-नगर गुरू राम सिंह के आदेशों का प्रचार किया।

'सन् 1867 तक उसने (गुरू राम सिंह जी) अपने आस-पास काफी चेले बना लिये थे। उसके 10 लाख अनुयायी (सिक्ख) बन चुके थे और उनका मनोरथ एक राजनीतिक दल बनाने का प्रतीत हो रहा था।'9

'इन लोगों के बड़े गिरोह को देखकर मालूम होता है कि इस ज़दीद फिरके की बड़ी जल्द तरक्की हुई है। गांव के गांव और इलाकों के इलाके कूके बन गए हैं। जिस वक्त गुरू नानक जी जो मौजूद थे, ने सिलसिला अरशाद किया, उनके यह नसीब ना हुआ कि दस बरस में एक हज़ार आदमी उनके चेलों में होता। उनके मज़हब का आरज़ पिछले मसनद् नशीनों के वक्त में हुआ था। इस मूजद की ज़िदगी में लाखों कूका हो गया।'10

अंग्रेज़ मेजर मैक. ऐन्ड्रीय, डी.आई.जी ने सरकार को रिपोर्ट में ही लिख दिया था कि 'राम सिंह के प्रचार ने पंजाब में तहलका मचा दिया है।'11

थोड़े ही समय में लोगों को गुरू नानक देव जी के दरवेश गुणों और बाबरी ज़ुलमों में फरक करने की समझ आ गई। गुरू जी ने लोगों को समझाया कि गुलामी का जीना, जीना नहीं, आज़ादी में ही सब नेमतें हैं, मानवजाति का विकास है, धार्म की प्रफुलता और समाज का विकास छुपा है। उन्होंने नारा लगाया कि आज़ादी मेरा धार्म है। क्योंकि 'गुरू राम सिंह का विश्वास था कि राजनीतिक आज़ादी धर्म का ही हिस्सा था। (डा. राजिंदर प्रसाद) 12

सत्गुरू राम सिंह के यह शब्द नामधारी सिखों के मन में बस गए। वह निड़र, निर्भय, निरवैर होकर अंग्रेज़ हकूमत विरूद्ध कूके मारने लगे और लोग उनको कूके कहने लगे। नामधारी शूरवीरों की कूक की

ध्वनि में ही बाल गंगाधार तिलक का यह नारा बुलंद हुआ था। 'आज़ादी मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है।'

'12 अप्रैल, 1857 ई0 को कूका झंड़े का फहराना गुरू राम सिंह जी की नीति का ऐलान था कि राजनीतिक आज़ादी मेरा धार्म है। यह श्री बाल गंगाधर तिलक के इस ऐलान आज़ादी मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है से बहुत-बहुत पहले की बात है।'

सत्गुरू राम सिंह जी ने सिक्खों में भक्ति और शक्ति का सुमेल करके खालसे को संत खालसे का रूप दे दिया। संत शब्द नामधारी सिक्खों के ऊंचे सच्चे आचार-विचार व्यवहार का साक्षी है। अंग्रेज़ लिखता है: 'कूका झूठ नहीं बोलता, कूका शराब नहीं पीता, कूका अंग्रेजो का वफादार नहीं.....।' और अंग्रेज़ों के अन्याय प्रति आवाज़ बुलंद करना, गाय और गरीब की रक्षा के लिये सिर उठाना, उनके खालसयी रूप का प्रकटन था, जो गुरू गोबिन्द सिंह जी के हुक्म में था कि-

'चुंकार अज़ हमें हीलते दर गुज़सत,
हलालसत बुरदन ब-शमशरी दसत'

पर संत खालसा बनने के लिये एक शर्त पर पूरा उतरना पड़ता था, वह शर्त थी।

'पहला मरना कबूल कर जीवन की छड आस।
होऊ सबना की रेणुका तऊ आओ हमारे पास।'

(पन्ना 1102)।

यह आत्म समर्पण की बात थी, मान सम्मान, अमीरी, गरीबी त्यागने की बात थी, जो हर वर्ग के भारतीयों ने कबूली और वह संत खालसा, नामधारी, कूके सिक्ख बनने लगे गए।

सत्गुरू राम सिंह जी इस समर्पण नीति 'पहला मरन कबूल' ने ही नेता जी सुभाष चन्द्र बोस को प्रभावित किया। उसने आज़ाद हिंद फौज़ बनाई और बिना किसी बदलाव के सत्गुरू राम सिंह की इस नीति को अपनी युद्ध नीति का मूल आधार बना लिया। नेता जी ने देशवासियों को कहा, 'आप मुझे खून दो मैं आपको आज़ादी दूंगा।'

गुरू राम सिंह जी के 'होऊ सबना की रेणुका' में भी एक गहराई छुपी थी। उस समय समाज अमीर व गरीब दो दलों में बंटा हुआ था। गुरू जी ने इस हद् बंदी पर गहरी चोट लगाई। अमीरज़ादों के गले में से सोने के गहने, मोतियों की माला उतरवा दी, रेशमी कपड़ों का त्याग करवा दिया, अमीर, गरीब सबको सफेद खादी के वस्त्रा, शुद्ध भारतीय पहरावा और गले में ऊन की सफेद माला पहना दी। ऐसा करने के दो कारण थे।

1. बाहरी बिखराव को समाप्त करके मालिक और गुलाम की बाहरी हदबदी तोड़ना। गरीब लोगों के मन से हीन भावना निकालनी। लोगों के मन से प्रभु चिंतन से आत्मिक और अंतरीव एकसुरता तो आ ही रही थी, बाहर से भी एक

पहरावा पहना कर सतूगुरू राम सिंह जी ने लोगों को एक करना शुरू कर दिया। अनुशासित एक फौज़ी की तरह।

2. खादी पहनने से विदेशी कपड़ों का खुद ब खुद ही त्याग हो गया। विदेशी कपड़ों की मांग कम होने लगी। खादी की मांग बढ़ने से घरेलू दस्ताकारी उद्योग में बढ़ावा होने लगा। गरीबों को काम और पैसे की उपलब्धि देश में ही होने लगेगी।

सतूगुरू रामसिंह जी के इस खादी की सादगी में से ही 50 साल बाद महात्मा गांधी जी के चरखो की उपज हुई। गांधी जी ने पहले विदेशी काट के वस्त्रों और कपड़ों का त्याग किया और फिर लोगों में इसका प्रचार शुरू किया।

असहयोग आंदोलन और स्वराज

'दरअसल गुरू राम सिंह जी ने जो इतिहासिक असयहोग और स्वदेशी लहर शुरू की थी, उसने भारत में से अंग्रेज़ी सामराज्य की जड़ें हिला दी थी और इस नीति की मदद से ही महात्मा गांधी जी भारत में से गुलामी के गलबे को हटाने में कामयाब हुये।'14

देश की आज़ादी के लिय असहयोग आंदोलन एक अनोखी बात थी। जो विश्व में पहली बार सतूगुरू राम सिंह जी ने की।

इनसाईक्लोपीड़िया ब्रिटेनिका की जिल्द 8, पेज़ 142 पर लिखा

है कि- (गुरू) राम सिंह, सिक्ख दार्शनिक, सुधारक और अंग्रेज व्यापारी के साथ और नौकरी के प्रति असहयोग और बायकाट को राजनीतिक शक्ति का हथियार बना के इस्तेमाल करने वाला पहला भारतीय है।'

'उनका असहयोग महात्मा गांधी जी के असहयोग से कई बातों में आगे था। अदालतों का बायकाट, अपनी पंचायतों की स्थापना सरकारी तालीम का बायकाट, विदेशी सरकार के बायकाट और रेल, तार व डाक के बायकाट का भी पूरा प्रचार किया। उस समय देश इतनी दुर्दशा में था कि बायकाट की बात सोची भी नहीं जा सकती थी।' 15

बरतानवी सरकार के पूर्ण बायकाट का मतलब था पूर्ण स्वराज, जिस के लिये कांग्रेस ने सन 1929 ई0 में लाहौर सैशन में सर्वसम्मति से फैसला किया। सतूगुरू राम सिंह जी कहने में नहीं करने में विश्वास रखते थे। इसलिये बायकाट के साथ-साथ रोज़ की जरूरतों, झगड़ों का निपटारा करने, कारोबार और बच्चों की पढ़ाई के लिये योग्य प्रबंध किये। अंग्रेजी वस्तुओं की जगह भारतीय-घरेलू वस्तुओं का प्रयोग करने के आदेश के कारण स्वदेशी का प्रचार तो हुआ ही, साथ-साथ देशी सन्नतों और घरेलू उद्योग को भी उत्साह मिलना शुरू हो गया। बच्चों की पढाई का प्रबंध धर्मशाला, मंदिरों, गुरूद्वारों में किया गया ताकि बच्चे देश की संस्कृति को जान सकें, अदालतों का तोड़ था पंचायतों की स्थापना, इलाकों में सूबे नियुक्त करने, प्रचार के लिये जत्थेदार, अपना 'कूका

डाक' प्रबंध देशी रियासतों के साथ गठबधन, फौजी शिक्षा के लिये कश्मीर राज्य में 'कूका पलटन' और विदेशों में पड़ोसी देश नेपाल, रूस के साथ राजनीतिक संबंध, इस बात का प्रतयक्ष प्रमाण थे कि सत्गुरू राम सिंह जी की रहनुमाई में नामधारी सिक्खों ने स्वराज स्थापित कर लिया था।

'केवल पंजाब को 70 सूबों में नहीं बांटा था ब्लकि इन में गुरु (राम सिंह जी) के सूबे दौरा करके खालसा राज्य के बहुत जल्द स्थापित होने का प्रचार करते थे और सिक्खों के सारे वर्गों की सारी शक्तियों को इक्टठा कर रहे थे।... कश्मीर, काबुल और नेपाल में अपने राजदूत भेजे थे। इनका (कूकों) का खुफिया डाक प्रबंध तो इतना परिपूर्ण था कि (गुरू जी) के आदेश हैरानी जनक तेज़ी से दूर इलाकों तक भी पहुंच जाते थे।'(16)

ऐलान-ए-जंग

अंग्रेज़ों ने फूट डालो और राज करो कि नीति से भारतीयों को गुलाम बनाया था। गुरु राम सिंह ने इस कुटिल नीति Divide and Rule के मुकाबले Unite and Fight अथवा 'जुड़ो और लड़ो' की नीति का ऐलान किया। लोग इकट्ठे हो गए और शक्ति बन गई।

जब अंग्रेजों ने अभी पंजाब पर पूरी तरह कब्ज़ा नहीं किया था

तो उसने शर्त रखी थी Kine are not to be killed- गाय नहीं मारी जाएगी, (मि. हैनरी. ऐम. लारेंस)।

पर 1849 में पंजाब पर कब्जा होते ही उल्टे-सीधे गाय हत्या शुरू हो गई। धीरे-धीरे अंग्रेज़ों ने हिन्दू, सिक्खों व मुसलमानों को लड़ाने के लिये गाय हत्या सरकारी तौर पर प्रवाण कर ली और बूचड़खाने खुल गए। अब 'गाय वध' का रोकना और रुकवाना इस बात का सबूत और चिन्ह था जो विदेशियों का राज्य और डर भारतवासियों या देश के ऊपर से उठ गया है। गाय वध को सरकारी तौर पर प्रवाण करना इस बात का सबूत और चिन्ह था कि भारतीय और भारत देश पराधीन है।'(17)

नामधारियों सिक्खों ने तो कभी भी विदेशी हुकूमत नहीं काबूली थी। वैसे भी सतूगुरू राम सिंह जी ने तो नामधारी झंडे तहत इकट्ठी हुई लोक शक्ति को एकजुट करने के हल सोचे हुए थे कि कैसे और कब विदेशी हकूमत पर हमला बोलना है। 'सतूगुरू राम सिंह जी ने सिद्धांतों और अमलों पर बड़ी अच्छी तरह सोच कर जत्थेबंदी के ढंग और थ्यूरियां भी साथ-साथ ही पैदा की। हर जत्थेबंदी के लिये इस बात की अत्यंत जरूरत जानी गई है कि श्रदालु का अड़िग भरोसा और शक्तियों को एक जगह जमा करने के लिये एक केन्द्रीय नुक्ता हो। यह विश्वास केन्द्र कोई रहस्यवादी, न समझने वाला या सदा बदलने वाला नहीं होना चाहिए बलकि सदा चमकीला, पुखता और प्रकाशमान शह जैसा न भूलने

वाला होना चाहिए। सत्‌गुरू राम सिंह ज़ी ने अपने संग्राम का केन्द्र गाय को बनाया। (18)

अंग्रेज़ धर्म के नाम पर लड़ाना चाहता था। गुरू राम सिंह जी भारतीयों को एक करके अंग्रेज़ों को निकालना चाहते थे। इसलिये उन्होंने अंग्रेज़े नीति को पहचाना और नामधारियों ने अंग्रेज़ विरूद्व जंग का ऐलान कर दिया।

शहादतें

अंग्रेज़ की तरफ से गुलामी का एहसास करवाने के लिये खोले गए बूचड़खाने नसली दंगों के अड्डे बने हुए थे और देशवासी धर्म के नाम पर लड़ते मरते रहते इसलिये बूचड़खाने पर हमले बोले गए। साथी अर्जुन सिंह गड़गज अनुसार 'नामधारी बूचड़ों को नहीं बूचड़खानों को खत्म करना करना चाहते थे। वह बूचड़खानों को भड़काहट के लिये कायत किया हुआ अड्डा समझते थे। जो हिन्दू मुसलिम झगड़ों का कारण बन सकता था और जो बाद में बना भी।'

अमृतसर में स्थित हरिमंदर साहिब व पवित्र सरोवर हमारे गौरवमयी इतिहास का प्रतीक है। जब गायों की हड्डियां, बोटियां पक्षीयों के रास्ते सरोवर और श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में गिरने लगे तो सबर की हद टूट गई। सो नामधारी सिक्खों ने 14-15 जून 1871 ई.

की रात को अमृतसर बूचड़खाने पर धावा बोला, और महीने बाद दूसरा हमला रायकोट बूचड़खाने पर किया।

यह अंग्रेज सरकार के लिये एक चुनौती थी कि कूके सिक्ख उनके साम्राज्य को नहीं मानते। अंग्रेज़ों ने भी इसको बगावत ही समझा। मि. जो डब्लयू मैकलब लिखता है,

'मैं समझता हूं कि उन बूचड़ों का जो सरकार की तपफ से प्रमाणित जगह पर गाय कशी करते हैं, का अजनबी लोगों की तरपफ से कत्ल किये जाना, खुलेआम हमारे शाही हुक्म की उलंघना है। मेरी यह राय है कि अगर इन बगावत करने वालों को सख्त सज़ा न दी गई तो हमारे साम्राज्य के लिये खतरा बन जाएगा।'(19)

ऊपर नीचे दो हमले देख अंग्रेज़ बोखला गया। उसने कुछ हिन्दू सिक्खों को पकड़ लिया और डरा धमका के केस बना दिया, जुर्म क़बूल करवा लिया कि अमृतसर बूचड़ खाने पर धावा उन्होंने ही बोला है। पर उसका झूठ निकल कर लोगों के सामने आ गया जब नामधारी सिक्खों ने अदालत में पेश होकर सबूत पेश किये और कबूल किया कि बूचड़खानों पर धावा उन्होंने बोला है।

पंजाब सरकार ने जो 9.9.1871 को भारत सरकार को रिपोर्ट भेजी उस अनुसार रायकोट वाले केस में उनके अपने आप जुल्म कबूल करने पर उनको सजाए मौत दी। तीन को फांसी दी गई जिनके नाम थे

संत मसतान सिंह, संत गुरूमुख सिंह और संत मंगल सिंह। इनको 5 अगस्त 1871 ई0 को फांसी चढ़ाया गया। (20)

अमृतसर वाले केस में चार सिंह बीहला सिंह, हाकम सिंह पटवारी, लहना सिंह और फतेह सिंह भाटड़ा को 15.9.1871 को फांसी की सज़ा हुई और तीनों सिक्खों को काले पानी की सज़ा हई जो जेल में ही शहीद हो गए। इन तीन सिक्खों के नाम थे लाल सिंह, लहिना सिंह लोपोकी और लहिना सिंह सुपुत्र स. बलाका सिंह। 'चारों सिक्खों ने पहले हरिमंदर साहिब पवित्र सरोवर में इश्नान किया फिर शब्द पड़ते रामबाग जहां सरेआम फांसी दी जानी थी वहां पहुचें।

स. संतोख सिंह बाहूवाल लिखते हैं सिक्खों के चेहरों पर लाली झलक रही है वह बे-गम हैं। जिन के मन में मौत का कोई भय नहीं है, निर्भय शब्द पढ़ते हैं। तख्तें पर चढ़े.....बढ़े हौंसले वालों ने जल्लादों को नज़दीक नहीं आने दिया। अपने हाथों से रस्सों को गले में डाल लिया। सफेद पौशाकें हंसों जैसी सूरतें सत् श्री अकाल बुलाई पैरों के नीचे से पटड़ा खींचा। अंत का नज़ारा आया। प्राण जुदा हुए। (21)

रायकोट वाले केस में दो और नामधारी सिक्खों सूबा ज्ञानी रतन सिंह और संत रतन सिंह को लुधियाना सेंट्रल जेल के बाहर बोहड़ के साथ फांसी दे कर शहीद कर दिया गया। फांसी चढ़ने से पहले सूबा ज्ञानी रतन सिंह ने अंग्रेज़ हाकम को गरज कर कहा था। 'फिरंगी मुंह

तो सामने रख पीठ क्यों की है? दस महीने किसी जट्टी की कोख में काट कर फिर आया जान। जवान हो कर बदला लेगें। (22)

मलेरकोटले का खूनी साका

इन घटनाओं के बाद अंग्रेज़ बहुत चौकन्ना हो गए। 30.12.1871 में पुलिस विभाग, पंजाब सरकार की तरफ से सारे कमिश्नर और डिप्टी इस्पैकटर जनरल पुलिस को हिदायतें कर दी गई कि 'आदरणीय लैफटीनैंट गवरनर का हुकम है कि आप राम सिंह कूका या उसके महत्वपूर्ण मुख्य अधिकारियों को बिना सरकारी मंजूरी के किसी बड़े मेले या समागम पर न जाने दिया जाऐ।' (23)

उसको नामधारियों के हाथों अपना विनाश होता नज़र आने लगा। वह किसी बड़े बहाने की तलाश में था। उसको मौका मिला, जब नामधारी सिक्खों के एक बड़े जत्थे ने मलेरकोटले पर धावा बोला। यह बात जनवरी 1872 ई. की है। 14 जनवरी शाम को मलोद में हल्की मुठभेड़ शुरू हुई जिसमें दोनो तरफ से दो-दो आदमी मारे गये। चार नामधारी सिक्ख ज्यादा जख्मी हो गए। जो मलोद वालों ने पकड़ लिये। इन चारों सिक्खों भगवान सिंह, ज्ञान सिंह, थम्मन सिंह और मेहर सिंह को अंग्रेज़ों ने 19 जनवरी 1872 ई. को पहले फांसी और बाद में काले पानी की सज़ा सुनाई। यह चारों सिक्ख जेल में शहीदी पा गए। सुबह

ढाबी दरवाज़े के रास्ते मलेरकोटले ऊपर सिक्खों ने धावा बोल दिया। दोनों तरफ जानी नुक्सान हुआ। सात सिक्ख शहीद हो गए। एक बुरी तरह जख्मी हो गया जो मलेरकोटले वालों ने पकड़ लिया और शहीद हो गया।

इसी दिन शाम को यह जत्था लड़ाई के बाद गांव रड़ पहुंचा। सरदार हीरा सिंह ने जत्थे को संबोधन किया 'सिक्खो! हमारा मतलब सिद्ध हुआ है। हमने तो अंग्रेज़ सरकार को बताना था कि अब के देशवासी जाग पड़े हैं। वह विदेशी राज्य नहीं चाहते और न ही अपने धर्म में किसी दखल अंदाज़ी को पसंद करते हैं।' इसके बाद मत बना कर जत्थे ने गांव शेरपुर जाकर आत्म सर्म्पण कर दिया। ठीक इसी तरह बाद में शहीद भगत सिंह संसद में बम फैंकने के बाद भागा नहीं, ब्लकि गिरफतारी देकर उसने अंग्रेज़ हकूमत के झूठ के पोल खोल दिये थे।

अंग्रेज़ हर वह चिंगारी बुझा देना चाहता था जो उसकी सता को सेक लगाए। उसने मन बना लिया कि इन बागी (देश भक्त) नामधारी सिक्खों को मार देगा। उस समय रियासत मलेरकोटले का प्रबन्धक अंग्रेज़ हाकिम डिप्टी कमिश्नर मि. कावन था। उसने मलेरकोटले के परेड़ गराऊंड में नाभा, ज़ींद, पटियाला से नौ तोपें मंगवाकर लगा दी।

नज़दीक के गांव से लोग भी इक्कठे कर लिये ताकि नामधारी सिक्खों को सज़ा मिलती देख कर, दोबारा कोई बगावत करने का साहस

न करे। नामधारी सिक्खों का जत्था 17 जनवरी 1872 शाम को मलेरकोटले के खूनी रक्कड़ में दाखिल हुआ। अंग्रेज़ हाकिम मि. कावन लिखता है,

'इन कैदियों का रवैया बहुत अनादर भरा और बेकाबू था। वे सरकार और देसी रियासतों के रजवाड़ों के विरूद्ध सब से ज्यादा गंदी बोली इस्तेमाल कर रहे थे। उन सभी ने यह माना कि वह मलोद और कोटले ऊपर हमले समय उधर हाज़िर थे और इस काम पर गर्व महसूस कर रहे थे।' (24)

मि. कावन, अंबाला कमिशनर मिस्टर फोरसाईथ को 17.1. 1872 की चिट्ठी में लिखता है।

'मैं आपकों अपनी सुबह की चिट्ठी के संधर्भ में आगे लिख रहा हूं कि मुझे बताते खुशी हो रही है कि 68 बागी कूके रड़ से यहां (मलेरकोटले) ले आए हैं। इन में दो औरतें और 66 आदमी हैं। 22 आदमी ज़ख्मी हैं पर ज्यादा कम ज़ख्मी हैं।' (25)

मि. कावन ने जत्थे के सरदार हीरा सिंह को सवाल किया, 'आपने गदर क्यों मचाया है।'

सरदार हीरा सिंह ने गरज कर उतर दिया, 'हम फिरंगियों (अंग्रेज़ों) का राज्य नहीं चाहते, अपने भाईयों का राज्य चाहते हैं। जब तक तुम्हारा राज्य खत्म नहीं होता, गदर मचाएंगे सिर उतारेंगे और

उतरवाएंगे, आपको यहां से निकाल कर सांस लेंगे।' (26)

डी.सी. कावन उत्तर सुन कर आग बबूला हो गया। बिना कोई कानूनी कारवाई किए, मुकदमा चलाया, उनको तोपों के साथ उड़ाने का हुक्म दे दिया।

'फिरंगी ने नीच को कहा कि इनको रस्से डाल कर आगे खड़े करो, सिक्खों ने जल्लाद को कहा पीछे हो जाओ, हम अपने आप ही जाकर खड़े हो जाएंगे। आगे जाकर गरज करते हुये खड़े हो गये। फिरंगी ने कहा पीठ करो। सिक्खों न कहा, पीठ नहीं करेंगे, सामने होकर चढ़ेगे। सामने छाती करके हौसले वाले सिक्ख खड़े हो गये।' (27)

सात तोपें सात बार चलीं। 49 सिक्ख देश की आज़ादी के लिये शहीद हो गये। जत्थे में दो बच्चे थे। एक बिशन सिंह और दूसरा हरनाम सिंह। बिशन सिंह की उम्र 12 वर्ष की थी और हरनाम सिंह की आयु 9 वर्ष थी।

अपनी पत्नी के कहने पर डी.सी. कावन ने कहा, 'तुम कह दो कि मैं राम सिंह का सिक्ख नहीं, तेरी जान बख्श दूंगा।'

सतूगुरू राम सिंह जी की बेअदबी होती देख, बिशन सिंह की आंखों से आग निकलने लगी। खून खौल उठा। उसने शेर की तहर लपक कर कावन की दाड़ी को हाथ डाल दिया और गरजा,

'फिर कहेंगा, कि मैं सतूगुरू रामसिंह का सिक्ख नहीं।'

दाढ़ी को ऐसा ज़ोर से झटका मारा कि कावन को दिन में तारे नज़र आने लगे। वह दर्द से कराह उठा। पास खड़े सिपाही भी घबरा गए। उन्होंने तेज़ी से तलवार चला कर पहले बिशन सिंह के हाथ काटे फिर सीस धड़ से जुदा कर शहीद कर दिया। डी.सी. कावन बिशन सिंह के हमले बारे लिखता है।'

'एक आदमी ने मेरे पर भयानक हमला कर दिया। मुझे दाड़ी से पकड लिया और मेरा गला दबाने का प्रयतन करने लगा। जैसे कि वह बहुत बलवान व्यक्ति था इस लिये मुझे अपना आप छुडवाने के लिये बहुत मुश्किल का सामना करना पडा।'28

दूसरा बच्चा हरनाम सिंह था, जिसकी उम्र केवल 9 साल की थी। उसके दिल में शहादत का चाव था। वह खुद तो तोप के सामने पूरा न उतरा, वह दौड़ कर अपने मामा जी की पीठ पर चढ़ गया। मामा भानजा तोप के सामने आ खड़े हुये। तोप चली और दोनो शहीद हो गए।

अगली सुबह हुई। 18 जनवरी 1872 को कमिश्नर मि. फोरसाईथ भी कोटले पहुंच गया। उसने कानूनी खाना पूर्ती करके, बाकी बचे 16 सिक्खों को भी तोपों के साथ उड़ा दिया। इनमें से एक सरदार वरयाम सिंह था। इसके लिये पटियाले वाले राजे ने रिहाई की सिफारिश की थी। अंग्रेज़ हाकिम ने वरयाम सिंह को कहा तू तोप के आगे से हट

जा तेरा कद छोटा है। वरयाम सिंह एक दम दौड़ा और साथ खेतों में से मिट्टी की डलियां इक्कूठी कर लाया। उनका थड़ा बना कर, उसके ऊपर खड़े होकर कहने लगा।

'देख फिरंगी, अब मैं तेरी तोप के सामने पूरा हूं, तू तोप चला।'

इस तरह मलेरकोटला साके में 10 सिक्ख लड़ते हुए, 4 काले पानी की सज़ा काटते जेल में 65, सिक्ख तोपों से और एक तलवार से, कुल 80 नामधारी सिक्ख शहादत पा गए।

भारत सरकार की तरफ से सचिव भारत राज्य लंडन को भेजी तार 7.2.1872 में इस साके का विवरण इस तरह किया है- '15 जनवरी को जिन करीब 125 कूकों ने मलेरकोटले पर धावा बोला था, उन पर काबू पा लिया गया है। उनमें से 8 मारे गए और 9 पकड़ लिये गए। बाकी 68 ने अगने दिन आत्म समर्पण कर दिया था जिनमें से 27 जख्मी थे। डिप्टी कमिश्न लुधियाना जो मलेरकोटला रियासत के उत्तराधिकारी के फैसले होने तक वहां का प्रबंधक भी है, के पास अफसरों सहित पटियाला रियासत के तीन घुड़सवार फौजी दस्ते सहायता के लिये उपलब्ध थे और बाद में पटियाला, ज़ींद और नाभा के 750 घुडसवार, 9 तोपों सहित उसकी मदद के लिये पहुंच गए थे, ने 17 तारीख को बिना कोई कानूनी मुकदमा या कारवाई करने के या कमिश्नर की मंजूरी लिये गौर कानूनी 49 कूकों को तोपों से उड़ा दिया है। भारत

सरकार पूर्ण रूप में इस बहुसंख्यक नर-सिंहार से असहमत है। क्योंकि इस कत्लेआम का कोई सही कारण नज़र नहीं आता, इसलिये और पड़ताल करने तक ड़िप्टी कमिश्नर को अस्थायी रूप में नौकरी से बरखास्त कर दिया गया है। अब पूर्ण अमन-अमान है।' (30)

काटन लिखता है, 'मेरी 1872 की यादें अपूर्ण रहेंगी, अगर मैं मलेरकोटले की घटना, जिसको मैं वहशेआना कतलेआम ही कह सकता हूं, का ज़िक्र न करूं.... मुझे पूरी तरह याद है कि मेरी भारत में नौकरी दरम्यान, मेरे लिये अभी भी बागीआना और खौफनाक घटना नहीं गुज़री जितना कि यह मौत का दृष्य था।' (31)

फ्रैंड आफ इंडिया में छपा विरोध इस तरह था, 'हम बिना कोई सरकारी ब्यान का इंतज़ार किये डिप्टी कमिश्नर कावन के आदेश अनुसार इस सामूहिक मानवीय कत्लेआम का विरोध करते हैं।' (32)

'जो पंजाब के इतिहास से वाकिफ हैं वे जानते हैं कि राज्य विरुद्ध बगावत करने वाले इन स्वाभिमानी सिक्खों की दिली इच्छा थी कि बजाय जल्लाद के हाथों फांसी लगने के तोपों से उड़ा दिय जाऐ। ऐसा ही कूको ने मौके पर हाज़िर अफसरों को कहा था।'(35)

मि. फोरसाइथ सिक्खों को तोपों के साथ बांधे जाने का ज़िकर नहीं करता। कूके सिक्खों को बांधने की ज़रूरत ही नहीं थी उन्होंने तो अंग्रेज़ रिकार्ड मुताबिक आप आत्म समर्पण किया था। वह तो मिट्टी के

ढेलो का थड़ा बना कर, छातीयां आगे करके, शहीद हुए थे, एक बच्चा तो अपने मामे की पीठ कर चढ़ कर शहीद होने वाला था। भला इन को तोप के मुंह से बांधने की क्या जरूरत थी।

मलेरकोटले का साका दुनिया के इतिहास में वहशीयाना कत्लेआम की एक अनोखी मिसाल थी, जिस को पढ़ कर मानव जाति त्राह-त्राह कर उठी, एक अंग्रेज़ सफरी इन शहीदों की शहादतों को देख कर कह उठा था,

'सारा योरप एक ईसा के फांसी चढ़ने पर मान करता है। मैंने आज यहां सैंकड़ों ईसा कुर्बान होते देखे है।'36

यह शहादतों की शुरूआत थी, इस के बाद अंग्रेज़ों के जुल्मों की बौछार शुरू हो गई।

सख्तियों का दौर

1. श्री भैणी साहिब गुरूद्वारे ऊपर पुलिस ने छापा मारा, तलाशी ली, निजी और पंथक वस्तुएं ज़ब्त कर लीं। गुरूद्वारे में मौजूद 172 सिक्खों, सिक्खनियों को कैदी बना कर लुधियाना ले आया गया। पूछ-ताछ की। इन में से 50 सिक्ख वे थे, जो अपना घर-बार बेचकर अपना आप सत्गूरू राम सिंह को समर्पित कर चुके थे। इनको

और तफसीस करने के लिये जेल में रख बाकी के लोगों को बाद में रिहा करके घर भेज दिया। 20 सिपाहियों की एक पुलिस चौकी गुरूद्वारे के मुख्यद्वार के आगे बिठा दी गई। जो करीब 50 साल सन् 1923 तक बैठी रही। गुरूद्वारे दर्शन करने के लिये रजिस्टर में नाम दर्ज होते, पूछलाछ की जाती। पुलिस वाले गंदी बोली बोलते। बात क्या, श्री भैणी साहिब गुरूद्वारा जेलखाना कारावास बन कर रह गया।

2. श्री सत्गुरू राम सिंह जी को 17 जनवरी 1872 ई0 को कैद कर लिया। 18 जनवरी सुबह स्पैशल गाड़ी द्वारा इलाहाबाद जेल में भेज दिया। वहां से 10 मार्च 1872 को कलकत्ते और 11 मार्च शाम 7 बजे समुद्री जहाज़ द्वारा देश निकाला लेकर ब्रिटिश बर्मा रंगून में कैद कर दिया गया। रंगून में श्री सत्गुरू जी 16.3. 1872 को सुबह पहुंचे। पर विदेश में भी सिक्खों ने संपर्क बना लिया और श्री सत्गुरू जी के आदेश-हुक्मनामे लेकर भारत में आकर नामधारी सिक्खों में प्रचार करते। मिस्टर अैल.अैच गरफिन 12.10.1877 को लिखता है, 'राम सिंह निरंतर अपने चेलें के साथ पत्र

व्यवहार कर रहा है। इन पत्रों की काफी कापियां खुफिया तौर पर भारत सरकार को प्राप्त हुई हैं।' (37)

इसलिये 8 साल बाद अंग्रेजों ने श्री सतगुरू राम सिंह जी को 18 सितंबर 1880 ई0 को आनन्दा नामक किश्ती द्वारा एक दूर जगह मरगोई में भेज दिया गया। मरगोई गुरू जी 21 सितम्बर 1880 ई0 को पहुंचे। पर यहां से भी गुरू जी ने अपने सिक्खों द्वारा रुस में सम्बन्ध बना लिये। आखिर अंग्रेज़ ने तंग आ कर झूठी खबर फैला दी कि गुरु राम सिंह का 29 नवंबर 1885 में देहांत हो गया हैं पर झूठ तो झूठ ही रहता है। सरकारी रिकार्ड के अनुसार ही सिद्ध होता है कि मौत की खबर केवल नामधारी सिक्खों का सम्पर्क तोड़ने के लिये दी गई थी क्योंकि

(क) सतगुरु राम सिंह जी का देहांत 29 नवंबर 1885 को दिखाया गया है जबकि अगस्त 1886 में चीफ कमिश्नर बर्मा सर चार्लस बरनाड़ शाह ने भारतीय दोस्त स0 अतर सिंह भदौड़ को पत्र लिखा 'कि राम सिंह कूका ऐसी दूर जगह पर बदला जा रहा है जहां से उसके साथ संपर्क करना आसान नहीं होगा।'

(ख) अंग्रेज़ ने गुरु जी की मौत का कारण 'डायरिया बताया' जबकि 1885 की बर्मा की जेल रिपोर्ट की स्टेट मैंट के Appendix No. XVI-Vital में साल 1885 में बर्मा जेल में कोई भी कैदी डायरिया से मरा नहीं दिखाया गया।

(ग) सून 1891 में बर्मा की मर्दम शुभारी की रिपोर्ट में पन्ना 170 पर श्री सत्गुरू जी का देहांत 1887 या 1888 दर्ज़ है जिस का सार अंश यह है कि सरकार ऐसे ही झूठ फैला रही थी। दरअसल उनको पता ही नहीं लगा कि श्री सत्गुरु राम सिंह जी किस समय कहां चले गए, इस लिये कभी 1885 और कभी 1887 या 88 सून में श्री सत्गुरु जी की मौत की झूठी खबर फैलाने की कोशिश की। (38) और तो और जब सत्गुरू हरी सिंह जी को मौत के बारे में बताया गया तो उन्होंने अंग्रेज़ से सत्गुरू राम सिंह की निज़ी वस्तुओं कपड़े, गुटका गड़वा आदि मांगा तो अंग्रेज़ कुछ भी पेश न कर सका। जो झूठे कपड़े पेश भी किए गए वह गुरू हरी सिंह जी को भी छोटे थे। जब कि अंग्रेज़ के अपने रिकाड़ मुताबिक सत्गुरू राम सिंह जी गुरू हरी सिंह जी से ज्यादा उंचे

व जवान थे।

असल में मौत की खबर बे-बुनयाद और झूठी थी जो केवल श्री सत्गुरू राम सिंह जी के सिक्खों के साथ संबंध तोड़ने के लिए फैलाई गई थी।

3. श्री सत्गुरू राम सिंह जी का गिरफतारी के साथ-साथ मुख्य सूबों को गिरफतार करने के लिये मलेरकोटले के साके से पहले ही पंजाब सरकार ने हुकम जारी कर दिए थे। जनवरी 16, 1872 ई. को इस बारे जानकारी देते पंजाब सरकार ने भारत सरकार को लिखा था। 'लैफटीनैंट गवर्नर ने राम सिंह और प्रमुख और प्रभावशाली सूबे साहिब सिंह, रूड़ सिंह, लक्खा सिंह, काहन सिंह, ब्रहमा सिंह, जवाहर सिंह, मलूक सिंह और मान सिंह को गिरफतार करने के लिये हुकम जारी कर दिये हैं। राम सिंह बहुत जल्द से जल्द गिरफतार कर लिया जायेगा। उसको कैद करने के लिये जनरल टाईटलर ने डवीज़न के कमिश्नर से विस्तारपूर्वक मशवरा कर लिया है।'39

17 जनवरी को एक अल्ग पत्र में पंजाब सरकार ने भारत सरकार को लिखा कि- 'मुझे आदरणीय लैफटीनैंट

गवरनर ने विनती करने के लिये कहा कि मेरी कल की चिट्ठी नं. 9सी में सूबा पहाड़ा सिंह का नाम उस लिसट में लिखना रह गया था जिनके लिये रैगूलेशन III 1818 के कानून तहत वारंट (हुकमनामा) चाहिए है।'(40)

इन सभी सूबों को पहले इलाहाबाद भेजा गया। इनके साथ स. मंगल सिंह को भी कैद किया गया। बाद में सूबा साहिब सिंह और सूबा काहन सिंह को पहले अदन और फिर 23.4.1875 ई. को हज़ारी बाग जेल में बदल दिया गया। 10 जून 1879 को सूबा साहिब सिंह जेल में ही शहीद हो गये और सूबा काहन सिंह को 25.5.80 में चुनार किले में भेज दिया गया। सूबा जवाहर सिंह, सूबा लक्खा सिंह और सूबा ब्रहमा सिंह को 30.12.1872 को मौलमीन बरमा में कैद कर दिया गया। जेल में ही सूबा जवाहर सिंह 29.11.1882 को और सूबा लक्खा सिंह 5 फरवरी 1903 ई. को शहीद हो गये। सूबा रूढ सिंह, सूबा मलूक सिंह और सूबा पहाड़ा सिंह को असीढ गढ़ बम्बई राज में कैद कर दिया गया।

सूबा मान सिंह और सूबा हुक्मा सिंह को अलाहाबाद से 9 दिसंबर 1872 ई. को चुनार के किले में कैद कर दिया गया।

4. समूह नामधारी सिक्खों को बागी करार दे दिया गया। 15.2.1872 ई. को पंजाब सरकार ने हुक्म जारी करके सभी नामधारी सिक्खों को गांव गांव में उनके इलाकों में नज़रबंद कर दिया और गांव से बाहर आने जाने पर नामधारियों को सरकारी मंजूरी लेनी पड़ती और हाज़री देनी पड़ती। यहां तक कि सामाजिक धार्मिक था पारिवारिक कार्यों में शामिल होने के लिये सरकारी मंजूरी अनिवार्य कर दी गई। (41)

5. पुलिस विभाग पंजाब ने जनवरी 23,1872 के दिन आदेश जारी किया जो कि सभी कमिश्नरों और डिप्टी इंस्पैक्टर पुलिस को भेजा गया कि 'माननीय लैफटीनैंट, गर्वनर यह आदेश जारी करते हुये खुशी महसूस करते है कि कूको के समारोह में पांच या ज्यादा लोग इकट्ठे न होने दिये जायें।' (42)

फिर 26.2.1872 के हुक्म में शुद्वी की गई कि ऊपरलिखित आदेश कूकों के धार्मिक स्थानों, जिन्हें

धर्मशालायें कहा जाता है, पर भी लागू किया जाता है।(43)

इस तरह धार्मिक समारोहों पर भी पाबंदी लागू हो गई। आदि श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के पाठ करने और करवाने वाले दोनों की जेल की सजायें होती। उदाहरण के तौर पर रायेसर के श्री उतम सिंह तथा बाबा चूहड़ सिंह को पाठ करवाने के जुर्म में छह-छह महीने की कैद हुई। झोरड़ गांव के संत पंजाब सिंह और ताबा जी को कई बार सज़ा हुई। बस्सियां के बाबा साहिब सिंह के घर का सारा सामान पाठ करवाने के जुर्म में ज़ब्त कर लिया गया। उनके बेटे संत सिंह और कर्म सिंह जी को छह-छह महीने की कैद भुगतनी पड़ी। रुपाणे गांव में पाठों के भोग डालने के आरोप में 44 सिंहो को छह-छह महीने कैद काटनी पड़ी।

6. सारे नामधारी पंथ को अपराधी प्रवृति के लोगों का वर्ग करार दे दिया गया। अंग्रेज़ सरकार की तरफ से 1872 के Criminal Procedure Act X धारा 504-505 के अंर्तगत नामधारी सिक्खों से सरकार के प्रति नेक चाल चलन की ज़मानते मांगी जाती।

श्री सतगुरू हरि सिंह जी

इन हालतों में सन् 1876 ई. में सत्गुरू राम सिंह जी के आदेशानुसार सत्गुरू हरि सिंह जी ने नामधारी पंथ की बागड़ोर संभाली। उनको भी 20 साल के लगभग समय के लिये श्री भैणी साहिब में नज़रबंद रखा गया। एक तरह पूरे पंथ पर अंग्रेज़ सरकार के अत्याचार थे। दूसरी तरफ श्री भैणी साहिब के द्वार पर पुलिस चौकी और सिक्खों की दर्शन करने पर पाबंदी। कहने का मतलब कारावास में से भी गुरू हरि सिंह जी ने अंग्रेज़ों के विरूद्ध अपनी लड़ाई जारी रखी। सिक्खों को सत्गुरू राम सिंह जी के पास भेजना, पत्रों का बांटना, आदेशानुसार फिर विदेशों के साथ राजनैतिक सम्बन्धा बनाने कोई आसान कार्य नहीं था। 1878-1881 ई. में बाबा गुरचरण सिंह नामधारी रूस के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने में सफल हो गये। उन्होंने पंजाब में गुरू हरि सिंह जी और उनके पीछे बड़ी गिनती में नामधारी सिक्खों के अंग्रेज़ विरूध रोष के बारे में बताया। वहां का गर्वनर काफमैन बाबा गुरचरण सिंह का बहुत आदर करने लगा। रूस की सरकार की तरफ से मदद के विश्वास का एक पत्र शक्तिशाली राजा बुध सिंह अर्थात सत्गुरू हरि सिंह जी को मिला। सत्गुरू हरि सिंह जी ने पत्र लिख कर रूस भेजे और रूसी सरकार ने तोहफे भी भेजे। इसके बाद बिशन सिंह अरोड़ा काबुल वाला रूस के साथ मेल मिलाप करता रहा। पत्र व्यवहार के लिये जिन और

ऐजेंटों की मदद ली जाती थी, उनके नाम थे माया हिन्दू, शंकर राय और राम चरण टोरा आदि मुख्य थे। भगवान सिंह अडबंगी भी कश्मीर के रास्ते रूस पहुंच गया।

जब महाराजा दलीप सिंह के रूस पहुंचने का पता चला तो कूका सिक्खों में उत्साह पैदा हो गया। बड़ी संख्या में नवयुवक नामधारी बिशन सिंह अरोड़ा और सत्गुरू राम सिंह जी को आदेश अनुसार महाराजो की सहायता के लिये रूस पहुंच गये थे। मीहा सिंह सरहाली वाला, और भी कई नामधारी रूस पहुंच कर एक सेना तैयार करने की तैयारियां करने लग पड़े। यहां तक कि अंग्रेज़ों को गुप्त सूत्रों ने सन् 1889 में सूचना दी थी कि बड़ी संख्या में कूके रूसी सेना में भर्ती होने के लिये रूस जा रहे हैं। पर पंजाब के सिक्खों की तरफ से निराशाजनक प्रतिक्रिया मिलने पर महाराजा दलीप सिंह हौंसला हार गया और यूरोप वापिस चला गया।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि '1881 में बंगाल रैगुलेशन-III, 1818 के तहित 80 भारतीयों में से 14 केवल कूके राजकीय स्टेट कैदी जेल में सज़ा काट रहे थे। (44)

काल

गुरू हरि सिंह जी के समय देश में काल पड़ गया, भूखमरी से लोग मरने लगे। श्री भैणी साहिब में 1857 ई0 से जो गुरू राम सिंह जी

का अटूट लंगर चल रहा था, उसके दरवाज़े काल पीडितों के लिये खोल दिये गये। कतारों की कतारें सतूगुरू राम सिंह जी की कर्मभूमि भैणी साहिब में अपनी भूख शांत करने आने लगी। अंग्रेज़ तो पहले ही भैणी साहिब के नाम से डरता था। वह भैणी साहिब पहुंचा और झूठी हमदर्दी जताते हुये कहने लगा, 'हम आपकी उदारता से प्रसन्न हैं कि आपने इन लोगों के लिये पुरूषार्थ किया। जबकि सारे देश में काल पड़ा हुआ है, हम आपको 2500 एकड़ भूमि लंगर के नाम पर देते हैं।' सतूगुरू हरि सिंह जी ने उतर दिया, 'यह तो सारा भारत ही हमारा है। तुम 2500 एकड़ किस ज़मीन की बात करते हो? हम ही इस देश के मालिक है। हमारी धारती हमें ही तुम किस हक से लौटाते हो। यह काल भी तुम्हारी बदनीयति का नतीजा है।' यह बात भी ठीक थी। अंग्रेज़ों ने भारत से अनाज़ इंग्लैंड भेजना शुरू किया हुआ था। गुरू हरि सिंह जी के समय 1877 में 79 लाख पौंड भांव 7 करोड़ 90 लाख रूपये, 1901 में 43 लाख पौंड भाव 13 करोड़ 95 लाख रूपये का अनाज इंग्लैंड भेजा गया। सन् 1849 से 1914 में बाईस गुणा ज्यादा अनाज भारत से भेजा गया। उस समय 1 मण-40 किलो कच्चा अनाज 1 रूपये में बिकता था। (45)

अर्थ शास्त्र के आंकड़ों के अनुसार सतूगुरू राम सिंह जी के समय अर्थात 1872 ई. तक 24 काल पड़े जिस में 64 लाख लोग मरे। पर जो काल गुरू हरि सिंह जी के समय में पड़े उनमें एक करोड़ पचास

लाख भूख से मर गये। इन संकटमयी दिनों में सत्गुरू हरि सिंह जी ने कारावास से भी अंग्रेज़ों के विरूद्ध अपना संघर्ष निरंतर जारी रखा।

श्री सत्गुरू प्रताप सिंह जी

सन् 1906 ई. में सत्गुरू प्रताप सिंह गुरूगद्दी पर विराजमान हुये। उन्हीं दिनों कांग्रेस सरगर्म हो चुकी थी। सत्गुरू जी के हुकम से नामधारी सिक्खों ने कांग्रेस के साथ कंधा से कंधा मिला कर आज़ादी की जंग लड़ना शुरू कर दी। पंजाब और पंजाब से बाहर जहां कही देश की आज़ादी के लिये लोग इकट्ठे होते, नामधारी वहां मौजूद होते। सन 1914 में पहली जंग लगी। सब राजनैतिक दलों ने अंग्रेज़ों का साथ दिया। फौज में भर्ती के लिये लोगों को प्रेरित किया पर नामधारी अंग्रेज़ों से परीचित थे उन्होंने इन्कार कर दिया। सबको आशा थी कि युद्ध के बाद अंग्रेज़ भारत का कुछ सोंचगे। पर हुआ इसके विपरीत। अच्छा करने के बजाय अंग्रेज़ रोलट ऐक्ट ले आया। जिसके विरोध में देश भर में प्रदर्षण हुए और जलियांवाला बाग का साका 1919 ई. बैसाखी वाले दिन हुआ। अगले साल का कांग्रेस सैशन अमृतसर हुआ। नामधारी पूरी तरह से शामिल हुए। सन 1925 में कांग्रेस की तरफ से अग्रेज़ों के विरूद्ध मोर्चा लगाया गया। जिसका केन्द्र ब्रैडला हाल लाहौर था। संत मंगल सिंह फतूही चक पंडित मनसा सिंह, संत निधान सिंह आलम

आदि नामधारियों ने मोर्चो का नेतृत्व किया और अनेक गिरफतारियां दी। कलकता सैशन में महाराजा गुरदयाल सिंह शामिल हुये। दिसंबर 1929 ई. में कांग्रेस का सलाना समागम लाहौर हुआ। जिस में पूर्ण स्वराज का मता पास हुआ। उस समय आम सिक्खों में धड़ेबंदी थी। बाबा खड़क सिंह अकाली जिसको सिक्खों का बेताज़ बादशाह कहा जाता था ने ऐलान कर दिया, जो इस कांग्रेस के जलसे में जाएगा सिक्ख नहीं होगा। लेकिन महान देश भक्त नामधारी सिक्खों ने समारोह में भाग ही नहीं लिए अपितु सारे लंगर का प्रबंध और खर्चा भी खुद किया। इस समय निकाले जलूस में नामधारी सिक्खों की शान ही अलग थी।

'कांग्रेस के जलूस को पूरी तरह कामयाब करने के लिये सतूगुरू जी के आदेश अनुसार नामधारी सिक्खों ने बहुत बड़ा हिस्सा डाला। सफेद खादीधारी नामधारी सिक्खों की यह शान देखने वाली थी। घोड़े पर सवार श्री नेहरू के साथ महाराजा निहाल सिंह जी घोड़े पर सवार थे। और इनके पीछे देवताओं के स्वरूप वाले देश भक्त नामधारी सिक्ख घोड़ों पर सवार मार्च कर रहे थे। अगर उस जलूस में सतूगुरू जी नामधारी संगतों को न भेजते और माता जीवन कौर जी लंगर का इंतजाम न करते तो उस सम्मेलन के असफल रहने में कोई शक नहीं था।'(46)

उन्हीं दिनों में ही कूका कांग्रेस दल असतित्व में आया। 17

फरवरी 1939 ई. में

लुधियाना स्टेट पीपलज़ कान्फ्रैंस हुई। इस समय निकले जलूस में श्री सत्गुरू प्रताप सिंह जी और हज़ारों नामधारी शामिल हुये। कांफ्रैंस के बाद पंडित नेहरू डाक्टर पटाभी सीता रामईया व और राजनैतिक नेता गुरू राम सिंह जी की कर्म भूमि श्री भैणी साहिब पहुंचे।

लोगों में देश प्रेम की भावना को प्रदर्शित करने और आज़ादी के लिये हो रहे प्रयत्नों को लोगों में प्रचार के लिये समाचार पत्रों, पत्रिकाओं ने योगदान डाला। इस क्षेत्र में मई 1920 मे साप्ताहिक 'सत्युग' ने बहुत रोल अदा किया। अंग्रेजों के विरूद्ध भावनाएं जागृत करने के कारण यह समाचार पत्र कई बार ज़ब्त किया गया। नामधारियों का यह समाचार पत्र सरकारी तौर पर फौज़ों में पढ़ना गैर कानूनी था। 'सत्युग' के बार-बार ज़ब्त किये जाने के कारण एक और समाचार पत्र 'कूका' छपना शुरू हो गया। बाद में यही समाचार पत्र 'मसताना' नाम के अंतर्गत छपती रही।

सत्गुरू प्रताप सिंह जी के समय श्री भैणी साहिब देश भक्तों और अंग्रेज सरकार की तरफ से बागी करार दिये भारतीयों की शरण स्थलि थी। चाहे वह स. तेजा सिंह स्वतंत्र और सोहन सिंह जोश कम्यूनिस्ट नेता हो या रतन सिंह बब्बर अकाली, सबके लिये खाने पीने व विचार गोष्ठी का मुख्य केन्द्र श्री भैणी साहिब ही था। जब सुभाष चन्द्र

बोस जी ने आज़ाद हिंद फौज़ बनाई तो उसका केन्द्र थाईलैंड की राजधानी बैंकाक में था, जहां इस फौज़ में सप्लाई सैकटरी की जिम्मेदारी नामधारी सेठ गुरबख्श सिंह ने अदा की और नेता जी के ड्राईवर की सेवा सेठ त्रिलोक सिंह करते थे। यहां तक कि जब पैसों की जरूरत पूरी करने के लिये नेता जी को सिक्कों से तोला गया तो नामधारी सिक्खों ने सब से बढ़कर योगदान डाला। इसलिये नेता जी ने कहा था कि 'गुरू राम सिंह जी के लहराये हुये आज़ादी के झंडे तले नामधारी कूकों ने जो कुर्बानियां दी हैं उस पर देश सदा गौरव करेगा। अब फिर भारतवासियों के देश प्रेम की परीक्षा का अनुभव रखने वाले नामधारी वीर कूकों से यही आशा है कि यह स्वतंत्रता का झंडा उठाके आगे-आगे बढ़ते दिखाई देते रहेंगे और दूसरे देश वासियों को भी बलिदान के लिये उत्साहित करते रहेंगे।'

सन् 1945 ई0 में शिमला में वेवल कान्फरैंस हुई। सभी देश भक्त राजनैतिक पार्टियों शिमला पहुंची। श्री सत्गुरू प्रताप सिंह जी भी पहुंचे। पंडित नेहरू कहने लगे, 'महाराज जी आप की क्या मांग है।' श्री सत्गुरू जी ने उत्तर दिया, 'हम अंग्रेज़ से क्यों कुछ मांगे, मेरी तो एक ही इच्छा है, हम आज़ाद हों, आज़ाद देश में गाय वध पूर्ण तौर पर बंद हो और गरीब आवाद हों।'

यहीं बस नहीं, सिक्खों-सिक्खों, हिन्दू-सिक्खों,

हिन्दू-सिक्ख-मुसलमानों में अंग्रेज़ों ने ऐसा फूट का बीज बोया कि भाई-भाई को अच्छा नहीं लगता था। सतूगुरू प्रताप सिंह जी ने धर्म और वर्ग की इन खाईयों को भरने के लिये सून 1934 में श्री गुरू नानक नाम लेवा सर्व सम्प्रदाय कान्फरैंस और सून 1942 में हिन्दू सिक्ख मिलाप कान्फरैंस का आयोजन श्री भैणी साहिब में किया।

देश भर के सम्प्रदायक नेताओं ने गुरू जी के प्रयत्नों के आगे सिर झुकाया और आगे एक जुट होने की कसम ली।

बात क्या, सून 1857 से 1947 तक लगातार 90 साल नामधारी सिक्ख अंग्रेज़ों के विरूद्ध संघर्ष करते रहे। इसीलिये तो अंग्रेज़ों ने लिखा था 'यह सच है कि कूकों के लिये अंग्रेज़ सरकार प्रति वफादार होने का सवाल ही पैदा नहीं होता।' (47)

अतः समूह देश भक्तों की कुर्बानियां रंग लाई, सतूगुरू राम सिंह जी की नीतियां सार्थक सिद्ध हुईं और देश आज़ाद हो गया। महान कवि रविंदर नाथ टैगोर ने कहा था,

'अपनी पसलियां जला कर कूकों ने वो शमा जलाई रखी, जिसके परिणाम स्वरूप अमन, आज़ादी लोकतंत्र और आपसी प्रेम को अलौकिक रूशनाई प्राप्त हुई।'

श्री सतूगुरू जगजीत सिंह जी

आज 60 वर्ष हो गये हैं देश को आज़ाद हुए और 150 साल कूका आंदोलन को। परन्तु अमन, ऐकता, आपसी भाईचारे, आपसी प्रेम और मानव कल्याण का यह अखंड दीपक उसी तरह श्री भैणी साहिब की पावन धारती पर प्रकाशमान है और विश्व भर में प्रकाश बांट रहा है।

वर्तमान में, श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी महाराज जहां भारतवर्ष की खुशहाली चाहते हैं, वहीं संपूर्ण मानवजाति के कल्याण के लिये नौजवानों की भलाई के लिये, नशा रहित और शाकाहारी समाज के सृजन के लिये और धार्मिक मर्यादाओं की परिपकता के लिये, देश-विदेश में स्कूल, कालेज, गुरमति संगति केन्द्र, खेल अकादमी का निर्माण कर रहे हैं।

श्री सतूगुरू जगजीत सिंह जी की यह दिली इच्छा है और पावन उपदेश भी के विश्व भर में अमन शांति का प्रचार हो, लोगों के मन में धर्म, वर्ग और रंग के आधार पर निर्माणित दीवारें गिर जाएं और उनके हृदय में प्रभु प्रमात्मा का प्रकाश हो और इसी की पूर्ति के लिये आप सातों द्वीपों में भ्रमण करके लोगों का मार्ग दर्शन कर रहे हैं।

समाप्त

टिप्णीयां और संदर्भ

1. दी वॉरिअर इन वाइट-जोगिन्दर बाली और कल्कि बाली, पृ. 181
2. महां नूर श्री सतूगुरू प्रताप सिंह पृ. 40
3. सिक्ख इतिहास और कूके अमर भारती पृ. 33-34
4. वही, पृ. 18-19
5. नामधारी इतिहास नाहर सिंह पृ. 127-126
6. भूपिंद्रानन्दकृज्ञानी ज्ञान सिंह पृ-30-31
7. सप्त स्प्रिंग-सः कपूर सिंह आई सी ऐस
8. मेजर जे. डब्लयू यंग हस्बैंड-इंस्पैक्टर जनरल पुलिस पंजाब 1863 का पुत्र नं.।
9. इन्साईक्लोपीडिया आफ ब्रिटैनिका 1851 आडिटर ऐस.जी. ऐडवर्डब्लफोर
10. तारीख वाकरी-मौलवी गुलाम भीख
11. मेजर मैंक ऐडरिओ डिप्टी इंस्पैक्टर जनरल पुलिस 9.6.1862 का पत्र
12. सतूजुग श्री भैणी साहिब 10 माघ 1992 विक्रमी.
13. दी वारिअर इन वाइट-जोगिन्दर बाली और कल्कि बाली पृ.18
14. सतूजुग - श्री भैणी साहिब 10 माघ 1992 विक्रमी
15. महान कूका लहर लेख शहीद भगत सिंह

16. मि. फोरसाईथ-कमिश्नर, अंबाला-रिपोर्ट 1872 ई0

17. सप्त स्निंग-सः कपूर सिंह आई.सी.ऐस.

18. आर्मड सट्रग्ल फार फरीड़म नाइन्टीं ईअरज़ वार-इंडियन इंडीपैडैन्स 1857 टू सुभाष-श्री बाल शास्त्री हरिदास जी।

19. मिः जे डब्लयू मैकनब-4-11-1871 की रिपोर्ट

20. मिः अैल अैच ग्रिफन सचिव पंजाब की सचिव भारत सरकार को भेजी रिपोर्ट 9.9. 1871

21. सतूगुरू बिलास- स. संतोख सिंह बाहुवाल

22. वही

23. अंडर सैकेटरी पंजाब का सर्कुलर पत्र न. 2 दिनांक 30.12. 1871

24. मि. अैल. कावन डिप्टी कमिश्नर लुधियाना का पत्र 17.1. 1872

25. वही

26. सतूगुरू बिलास- सं संतोख सिंह बाहूवाल

27. वही

28. मि. अैल कावन डी.सी लुधियाना का पत्र 17.1.1872

29. संत खालसा संत हरनाम सिंह पृ. 50-51

30. भारत सरकार द्वारा सचिव भारत राज-लंदन को भेजी तार 7. 2.1872

31. इंडियन अैंड होम मैमोरीज़ सर हैनरीकॉटन पृ. 110-113



सूचना
एवं
जन
सम्पर्क
पंजाब